सेमी शर्मा

बी ए हिंदी ऑनर्स

HIN/18/22

हिंदी विभाग

Teacher's Sign .....

Topic..... Date.....

प्रश्न विज्ञापन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर किसी उत्पाद, अथवा सेवा को बेचने अथवा प्रवर्तित करने के उद्देश्य से किया जाने वाला जनसंचार विज्ञापन (Advertising) कहलाता है। विज्ञापन विक्रय कला का एक नियंत्रित जनसंचार माध्यम है जिसके द्वारा उपभोक्ता को दृश्य एवं श्रव्य सूचना इस माध्यम से प्रदान की जाती है कि वह विज्ञापनकर्ता की इच्छा से विचार सहमति, कार्य अथवा व्यवहार करने लगे।

औद्योगिकीकरण आज विकास का पर्याय बन गया है। उत्पादन बढ़ने के कारण यह आवश्यक हो गया है कि उत्पादित वस्तुओं को उपभोक्ता तक पहुंचाया ही नहीं जाय बल्कि उसे उस वस्तु की जानकारी की दी जाय। वस्तुतः मनुष्य को जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है वह उन्हें तलाश ही लेता इसके ठीक विपरीत उसे जिसकी जरूरत नहीं होती वह उसके बारे में सुनकर अपना समय खराब नहीं करना चाहता। इस अर्थ में विज्ञापन वस्तुओं को ऐसे लोगों तक पहुंचाने का कार्य करता है जो यह मान चुके होते हैं कि उन वस्तुओं की उसे कोई जरूरत नहीं है। आशय यह कि उत्पादित वस्तु को लोकप्रिय बनाने तथा उसकी आवश्यकता महसूस कराने का कार्य विज्ञापन करता है।

विज्ञापन अपने छोटे से संरचना में बहुत कुछ समाये होते हैं। आज विज्ञापन हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है।

Teacher's Sign .....

Topic...Date....................

कार्य भी किया है। समाचार पत्र हो या पत्रिकाए, दूरदर्शन हो या आकाशवाणी, इश्तहार हो या दीवारों पर लिखे जाने वाले विज्ञापन सभी जगह विज्ञापनों के अश्लील स्वरूप ने मानव जीवन को नारकीय बना दिया है। जहा घरों मे बच्चों के साथ टीवी देखना दूभर हो गया है वही बाजारों में निकलना भी कम मुश्किल नहीं है।

लोकतंत्र स्वरूप मे भी विज्ञापनों की भूमिका बढ़ी है। चुनाव के समय राजनैतिक दल अपने-अपने पक्ष में जनता को रिझाने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेते है और शासन मे आने के बाद सरकारे विज्ञापनो के माध्यम से जनहित मे जारी उपक्रमो एव नीतियों को जनता तक पहुँचाने मे सफल हो रही है तथा जनता भी सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी विज्ञापनों के माध्यम से प्राप्त करती है। अत: यह कहा जा सकता है कि विज्ञापन मानवीय जीवन में एक महत्व-पूर्ण स्थान बना चुका है।

विज्ञापन : अर्थ व परिभाषा

'विज्ञापन' की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। विज्ञापन शब्द 'वि ज्ञाणिचल्युट' पुकागम से विनिर्मित है इसका प्रयोग संस्कृत काव्य मे 'शिष्ट उक्ति' या संवाद, 'प्रार्थना', 'अनुरोध' 'सूचना' 'वर्णन' 'शिक्षण' आदि के अर्थों मे मिलता है। दूसरे शब्दों मे 'ज्ञापन' का अर्थ होता है 'ज्ञात करना' या 'सूचना प्रदान करना' तथा 'वि' का अर्थ है विशेष। अर्थात विज्ञापन का विशेष रूप है।

विज्ञापन अंग्रेजी के शब्द 'एडवरटाइजिंग' (Advertising) का हिंदी का रूपांतरण है इसकी उत्पति लेटिन भाषा के शब्द 'Adventor' से होती है जिसका अर्थ होता है

Teacher's Sign ....

Topic.. Date..............................

'द टर्न टू' या किसी ओर मुड़ना' अर्थात लोगों को अपनी ओर मोड़ना या आकृष्ट करना।

'हिंदी शब्द सागर' में रामचंद्र वर्मा ने विज्ञापन को उल्लेखित करते हुए कहा है कि-"विज्ञापन जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाती है, वह सूचना या इश्तहार, बिक्री आदि के माल या किसी बात की सूचना जो सब लोगों को विशेषता सामाचिक पत्रों के द्वारा दी जाती है।"

'वृहत हिन्दी कोश' के अनुसार विज्ञापन का अर्थ है- "समझना, सूचना देना, इश्तिहार, निवेदन, प्रार्थना।"

'अमेरिकन मार्केटिंग एसोशियेशन' के अनुसार "विज्ञापन अपने विचारों, वस्तुओं या सेवाओं का संवर्द्धन के लिए किया गया प्रयास है।"

डॉ डरबन का मानना है कि- "विज्ञापन के अंतर्गत वे सभी क्रियाए आ जाती है जिनके अनुसार दृश्यमान या मौखिक संदेश जनता को सूचना देने के उद्देश्य से उन्हें या तो किसी वस्तु के क्रय करने के लिए अथवा पूर्व निश्चित विचारों, संस्थाओं अथवा व्यक्तियों के प्रति झुक जाने के उद्देश्य से संबंधित किए जाते है।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार- "पर्चे, परिपत्र, पोस्टर अथवा पत्र-पत्रिकाओं द्वारा सार्वजनिक घोषणा।

विज्ञापन के विषय में ब्रिटेनिका इनसाइकलोपेडिया वर्णन करता है कि विज्ञापन एक जन-घोषणा है जिस समान्यत: प्रिंट, ऑडियो वीडियो के द्वारा की जाती है।

Topic..... Date.....

जिसके माध्यम से विभिन्न वस्तुओं, सेवाओं, तथा विचारों विभिन्न संचार माध्यमों जिसमें बिल बोर्ड, प्रत्यक्ष डाक, मुद्रित पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों रेडियो, टेलीविजन तथा विश्व व्यापी संजाल के द्वारा प्रमोशन किया जाता है।

अमेरिका जर्नल 'एडवरटाइजिंग एज' के मतानुसार - "विज्ञापन किसी विचार (Idea) सेवा (Service) या उत्पाद (Product) से संबंधित संदेश (Information) का विस्तार है जो विज्ञापन के हितों की रक्षा करता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन के उपरांत विज्ञापन के विषय में कहा जा सकता है कि - विज्ञापन मुद्रित, लिखित या उच्चरित विक्रय कला है जिसके माध्यम से संस्थान या संगठन के मत की पुष्टि के लिए आवश्यक वातावरण तैयार किया जाता है तथा न केवल वस्तु अपितु सेवा की बिक्री भी की जाती है।

महत्व

आधुनिक मानवीय जीवन में विज्ञापन एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। जीवनोपयोगी प्रत्येक वस्तु के महत्वपूर्ण दो अंग हैं, जिन्हें उपभोक्ता और व्यवसायी का रूप दिया जा सकता है। उपभोक्ता वह है जो किसी वस्तु का उपयोग करता है और व्यवसायी वस्तु का निर्माण करता है। प्रारम्भिक दौर में वस्तु और उपभोक्ता के बीच का काम बिचौलिए किया करते थे। अतः बिचौलिए वस्तु को उपभोक्ता तक पहुंचाने का काम किया करते थे। बिचौलिए अपने लाभ के लिए वस्तु की कीमत निर्धारण करते थे। जिससे वस्तु अपनी वास्तविक

Teacher's Sign .....

Topic........ Date........

कीमत से कहीं अधिक उपभोक्ताओं से वसूली जाती थी। कभी - कभी विचौलिए वस्तु की गुणवत्ता को अधिक दर्शाकर उपभोक्ता को ठगने का काम भी करते थे। वह पद्धति आज भी विद्यमान है परन्तु विज्ञापनों के माध्यम से व्यवसायी ने उपभोक्ता से सीधे जुड़ने का काम किया है। अतः विज्ञापन का महत्व जानने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है।

1. बाजार में नए उत्पादन का परिचय - विज्ञापन नए उत्पादन को बाजार से परिचय कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विज्ञापन के माध्यम से लोगों को उत्पादन के संबंध में जानकारी मिलती है और उत्पादन को खरीदने में भी सहायता मिलती है।

2. बाजार का फैलाव - विज्ञापन उत्पादन को अपना बाजार में सहायता प्रदान करता है। यह न केवल नया बाजार खोजने में सहायक होता है बल्कि पुराने बाजार को बनाए रखने में भी मदद करता है। विज्ञापन के माध्यम से निर्माता अपने उत्पादन को सुदूर क्षेत्र में बैठे उपभोक्ता तक आसानी से पहुँचा सकता है।

3. बिक्री में बढ़ोतरी - विज्ञापन उत्पादन एवं उसके विक्रय के क्षेत्र में बढ़ोतरी में मदद करता है। अतः यह भी कहा जाता है कि विज्ञापन पर किए गए अतिरिक्त खर्चे से न केवल बिक्री को बढ़ाया जा सकता है अपितु विक्रय खर्च को भी कम करता है।

4. उत्पादन में सुधार - बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को विभिन्न नामों से विज्ञापित किया जाता है। एक प्रतिष्ठित वस्तु उपभोक्ता के समक्ष अपनी गुणवत्ता

Topic..... Date.....

सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। उत्पादक उपभोक्ता के लिए एक अच्छी गुणकारी वस्तु उपलब्ध कराने का प्रयास करता है और अपने उत्पादन में उपभोक्ता का विश्वास बनाए रखने के लिए प्रयासत रहता है।

5. विक्रेता की सहायता – विज्ञापन वास्तव में एक विक्रेता के कार्य में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है। विज्ञापनों के माध्यम से उपभोक्ता पहले से ही परिचित है। अतः विज्ञापन एक विक्रेता के प्रयासों में सहाती भूमिका निभाता है। इसीलिए ठीक ही कहा गया है कि- "विक्रय और विज्ञापन कप और प्लेट या ताले और चाबी की तरह है।"

6. रोजगार के अवसर प्रदान करना – विज्ञापन अनेक प्रकार के रोजगार सृजित करता है और पेंटर, फोटोग्राफर, गायक, कार्टूनिस्ट संगीतकार, मॉडल और विभिन्न प्रकार की विज्ञापन करने वाली संस्थाओं में नौकरी के अवसर प्रदान करते हैं।

7. उच्च जीवन पद्धति को बढ़ावा – विकसित राष्ट्रों के अनुभव बताते हैं कि व्यक्तियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में विज्ञापनों की महत भूमिका होती है। भारत जैसे विकासशील देश में व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और उनके गुणकारी उत्पादों की ओर ध्यान दिलाकर उनके जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है। विस्टन चर्चिल के शब्दों में – "विज्ञापन व्यक्ति की उपभोग शक्ति को विकसित करता है और जीवन स्तर के अच्छा बनाने की चाहत को उत्पन्न करता है।"

Teacher's Sign .....

Topic..... Date.....

8. राष्ट्रहित – विज्ञापन का योगदान राष्ट्रसेवा के लिए भी कम नहीं है। उत्पादन के प्रति लोगों को जागरूक बनाकर विज्ञापन देश की अर्थव्यवस्था के विकास में विशेष सहयोग प्रदान करता है। इतना ही नहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों, अन्तरराष्ट्रीय समझौतों आदि को पारदर्शी रूप में प्रस्तुत कर विज्ञापनों ने पूरे वैश्विक परिदृश्य के हित का कार्य किया है। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक मुद्दों के विज्ञापनों के द्वारा किसी भी देश के विचारों उसकी संस्कृति तथा विकासात्मक स्थिति को प्रस्तुत कर उसे कल्याणकारी कार्यों को जानता केंद्रीय ले जाना भी राष्ट्रहित का कार्य है।

9. मनोरंजन के लिए उपयोगी – विज्ञापन की रंग योजना, महिलाओं के भड़कीले चित्र, शब्द योजना, अश्लील चित्रों का प्रयोग, आकर्षक शैली इससे उपभोक्ताओं का मनोरंजन भी होता है। फिल्मों के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन का अत्याधिक प्रयोग किया जाता है। फिल्म मनोरंजन का सबसे बड़ा माध्यम है।

10. उद्योगों की आवश्यकता –
विज्ञापन हर उद्योग के लिए एक आवश्यकता बन गया है उस उद्योग को आगे ले जाने के लिए विज्ञापन न केवल प्राथमिक स्तर पर बल्कि हर स्तर पर उसकी तैयारी तथा अन्य कई चीजें पढ़ाने में सहायता करता है। आज के समय में हर विक्रय वस्तु का सबसे बड़ा जनसंचार माध्यम है और लोगों को जानकारी प्रदान करने के लिए आवश्यक भी है।

11. प्रतियोगिता – आज बाजार में विभिन्न उत्पादनों को लेकर प्रतियोगिता का दौर है। एक ही

Teacher's Sign.....

Topic ______ Date ______ Page No. ______

प्रकार की अनेक वस्तुए उत्पादकों द्वारा निर्मित की जा रही है और प्रत्येक उत्पादक अपने उत्पादन को सबसे अधिक उपयोगी व सस्ता बनाने का प्रयास करता है। अतः प्रभावी विज्ञापन के माध्यम से इस प्रतियोगिता के दौर में न केवल उपभोक्ता तक पहुंचने मे सहायता मिलती है बल्कि निरंतर विज्ञापन उत्पादन को प्रतियोगिता मे बनाए रखता है।

12. समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं की लागत में कमी - विज्ञापनों के माध्यम पत्रों एवं पत्रिकाओं की लागत में कमी आती है। समाचार पत्रों की लागत का अधिकांश भाग उसमें छपने वाले विज्ञापनों से पूरा किया जाता है।

13. साख निर्माण - विज्ञापन उत्पादन की साख निर्माण में भी सहायता सिद्ध होता है। उत्पादक विज्ञापन के द्वारा अपने उत्पादन को जनमानस तक पहुँचाता है और निरंतर विज्ञापन से उत्पादन और उत्पादक की साख में बढ़ोत्तरी होती है।

निष्कर्ष

आज के इस दौर मे विज्ञापन न लोगो की मानसिकता पर काबू किया है बल्की उन्हे क्या चीज सही है उनके लिए और क्या नही ये भी समझाने मे सक्षम है। तथा विज्ञापनो के माध्यम से अनेको अनेक उद्योगो ने अपना उत्पादन बढ़ाया है तथा तरक्की भी की है।

Topic..... Date.....

स्वरूप और अवधारणा

विज्ञापन मात्र जनसंचार का माध्यम बन कर नहीं रह गया है अपितु वह जीविका का साधन भी हुआ है। साथ ही वर्तमान तकनीकि युग में विज्ञापन का प्रचलन बढ़ा है। या यह कहा जाए कि वर्तमान तकनीकि युग विज्ञापन का युग है तो अतिशयोक्ति न होगी। आज प्रिंट मिडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सभी में विज्ञापनों की भरमार है। विज्ञापनों के माध्यम से मानवीय जीवन की हर उपयोगी वस्तुओं के संबंध में उसके गुणों एवं अवगुणों के बारे में जानकारी आसानी से मिल सकती है। घर के अंदर टेलीविजन या समाचार पत्रों, इंटरनेट, बाजार में पोस्टरों और होर्डिंग, रेल यात्रा, बस यात्रा या हवाई यात्रा हर जगह विज्ञापन दिखाई देते हैं। मानवीय जीवन चाहे वह उपभोक्ता के रूप में हो या निर्माता के रूप में विज्ञापन के बिना अधूरा है। विज्ञापन एक ओर उपभोक्ता को बिना अधिक परिश्रम किए उपयोगी वस्तुओं के बारे में सटीक जानकारी देने में मदद करता है, वहीं दूसरी ओर निर्माता को भी उसकी कुछ लागत पर वस्तु को उपभोक्ता तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होता है।

सामाजिक स्वरूप में विज्ञापनों के माध्यम से चेतना का विकास हुआ है। विज्ञापनों के माध्यम से नशाबन्दी, दहेज प्रथा, महिलाओं के साथ होने वाले अभद्र व्यवहार एवं अनेक सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया जा रहा है। उदाहरण के लिए शराब की हर बोतल पर वैधानिक चेतावनी - "शराब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।" लिखा होता है जिससे समाज में शराब के उपयोग को कम किया जा सके। इसादि साथ ही विज्ञापन के अश्लील स्वरूप ने सामाजिक संहिता को नष्ट करने का कार्य